क्या आप मसीह की कलीसिया की सच्ची उत्पत्ति और बुलाहट को जानते हैं?
एक विश्वासी के रूप में यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि हमारे विश्वास की यात्रा कहाँ से शुरू हुई थी, क्योंकि वही ढाँचा आज भी हमारे मिशन को आकार देता है।

जो सुसमाचार यरूशलेम (इज़रायल) में शुरू हुआ था, वह अंततः आप तक और मेरे तक पहुँचा। यह कोई संयोग नहीं था। यह सताव, पीड़ा, विस्थापन और विश्वासयोग्य गवाही के माध्यम से हम तक पहुँचा। यह समझने से हमें यह दिखता है कि सुसमाचार का उद्देश्य हर राष्ट्र, हर पीढ़ी, और पृथ्वी के हर कोने तक पहुँचना है — जब तक हर किसी ने सुन न लिया हो।

यरूशलेम में आरंभ

प्रारंभिक दिनों में कलीसिया एक होकर यरूशलेम में इकट्ठी होती थी (प्रेरितों के काम 2:42–47)।
लेकिन जब सताव आया, तो वह एकता टूट गई।
विश्वासियों को बंदी बनाया गया, पीटा गया, और कुछ को उनके विश्वास के लिए मार दिया गया — स्तेफन पहले शहीद बने (प्रेरितों के काम 7:54–60)।
इससे बहुत से विश्वासियों को इज़रायल से भागना पड़ा और वे आसपास के देशों में बिखर गए।

प्रेरितों के काम 8:1, 4 (O.V.B.):
“… उस दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उत्पात हुआ, और सब लोग यहूदिया और सामरिया के देश में तित्तर-बित्तर हो गए, केवल प्रेरित वहीं रहे। […] इसलिये जो तित्तर-बित्तर हुए थे वे
वचन का प्रचार करते फिरे।”

ध्यान दें: बिखराव ने उन्हें चुप नहीं कराया — बल्कि सुसमाचार और तेजी से फैला।
जो त्रासदी जैसा प्रतीत होता था, वह परमेश्वर की रणनीति बन गया। शहीदों का लहू कलीसिया का बीज बन गया।

सीमाओं से परे मिशन

जब विश्वासी बिखरे, तो उन्होंने मसीह को अपने साथ ले लिया।
वे प्रेरितों, मण्डलियों या भवनों का इंतज़ार नहीं करते रहे। हर विश्वासी एक गवाह बन गया (प्रेरितों के काम 1:8)।
चाहे गाँव हो, नगर हो, या विदेशी भूमि — वे जी उठे मसीह की घोषणा करते थे।

यीशु ने पहले ही यह भविष्यवाणी की थी:

मत्ती 28:19–20 (O.V.B.):
“इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को मेरा चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो; और उन्हें यह सिखाओ कि जो कुछ मैंने तुम्हें आज्ञा दी
है, वे सब बातें मानें; और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ।”

बिखराव कलीसिया का पतन नहीं था — बल्कि उसका विस्तार था। शत्रु ने जो हानि के लिए योजना बनाई थी, परमेश्वर ने उसे विजयी उद्देश्य में बदल दिया।

बिखरे हुए विश्वासियों को पत्र

प्रेरितों ने भी यह समझा कि कलीसिया अब केवल यरूशलेम तक सीमित नहीं रही।
पतरस ने अपनी पत्री उन विश्वासियों को लिखी जो विदेशों में “परदेशी” होकर बिखरे हुए थे:

1 पतरस 1:1 (O.V.B.):
“यीशु मसीह का प्रेरित पतरस की ओर से, उन चुने हुए लोगों के

नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कपदूकिया, एशिया और बिथुनिया में परदेशी होकर रह रहे हैं।”

ग्रीक शब्द डायस्पोरा (बिखराव) यह दर्शाता है कि विश्वासी संसार में बीजों की तरह फैलाए गए थे।

परंतु जो बीज बिखरते हैं, वे व्यर्थ नहीं जाते — वे बड़ी फसल के लिए बोए जाते हैं।

कलीसिया किसी स्थान से बंधी नहीं है

सुसमाचार किसी एक स्थान, एक संस्कृति, या एक जाति तक सीमित नहीं है।
परमेश्वर की उपस्थिति सारी पृथ्वी में व्याप्त है:

भजन संहिता 139:7–10 (O.V.B.):
“मैं तेरे आत्मा से भागकर कहाँ जाऊँ? तेरे सम्मुख से कहाँ भागूँ?… वहाँ भी तेरा हाथ मेरी अगुवाई करेगा, और तेरा
दाहिना हाथ मुझे संभाले रहेगा।”

पौलुस भी याद दिलाता है:

2 तीमुथियुस 2:9 (O.V.B.):
“…परमेश्वर का वचन बंधा नहीं हो सकता।”

आपका कार्यस्थल, विद्यालय, या विदेश — कोई रुकावट नहीं है। यह एक अवसर है।
जैसे प्रारंभिक विश्वासियों ने नए स्थानों में मसीह की घोषणा की, वैसे ही हमें भी आज करना है।

आज का बुलावा

आज भी लोग नौकरी, पढ़ाई, परिवार या युद्ध के कारण स्थान बदलते हैं।
लेकिन सवाल है:
क्या आप मसीह को अपने साथ उन नए स्थानों में ले जाते हैं? क्या आप साहसपूर्वक गवाही देते हैं, या चुप हो जाते हैं?

प्रारंभिक कलीसिया ने कभी नए परिवेश को अपने विश्वास को रोकने नहीं दिया — और हमें भी नहीं देना चाहिए।

प्रेरितों के काम 1:8 (O.V.B.):
“परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे;
और यरूशलेम, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।”

यह मिशन आज भी वैसा ही है।
कलीसिया का बिखराव — चाहे स्वेच्छा से हो या मजबूरी में — परमेश्वर की योजना का हिस्सा है, ताकि सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए।

हबक्कूक 2:14 (O.V.B.):
“क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा की पहचान से वैसे ही भर
जाएगी जैसे समुद्र जल से भरा रहता है।”

आपके लिए संदेश

आप जहाँ कहीं भी जाएँ — जान लें, परमेश्वर का आत्मा आपके साथ है।
आपका वातावरण कोई सीमा नहीं है — वह आपका क्षेत्र है।

हर बातचीत, हर संबंध, हर स्थान — मसीह के प्रकाश को चमकाने का अवसर है।

इसलिए यह मत कहिए: “मैं यहाँ गवाही नहीं दे सकता — घर पर
आसान था।”
यह विचार परमेश्वर की ओर से नहीं है।

बल्कि, बुद्धि, साहस और सही शब्दों के लिए प्रार्थना करें। जैसे परमेश्वर ने प्रारंभिक कलीसिया को सामर्थ दी, वैसे ही वह आपको भी देगा।

शांति (Shalom)।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp